कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

"प्राण" और **"आत्मा"** की **सच्चाई** को वचनों में देखने के आग, आगे जाते हु एहम आज बाईबल में **आत्मा/प्राण** की **मृत्यु** के विषय में **विरोधात्मक लगने वाले** कुछ वचनों के अंश को समझेंगे जिसे हम "बाईबल सम्बन्धी अन्तर्विरोध" बुलाते हैं।
पहली नज़र में वे यह विचार देते हैं कि मृत्यु के बाद भी आत्मा **"जीवित"** रहती है।
लेकिन आइये हम इसे देखें –

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

1 शमूएल (Samuel) 28: 7-19

(एक बार पूरी तरह से पढ़ें)

यहाँ इस्राएल के शाऊल राजा एक भूत-सिद्धि करनेवाली से विचार-विमर्श करने का प्रयास करते हैं और फिर **मरे** हुएभविष्यद्वक्ता शमूएल से विचार-विमर्श करना चाहते हैं।

वह एक ऐसी स्त्री को **एन्दोर** नामक स्थान में खोज निकालता है।

और फिर हम पढ़ते हैं -

1 शमूएल (Samuel) 28:8 "तब शाऊल ने अपना भेष बदला और दूसरे कपड़े पहिनकर, दो मनुष्य संग लेकर, रातोंरात चलकर उस स्त्री के पास गया; और कहा, "अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहलवा, और जिसका नाम मैं लूंगा उसे बुलवा दे।"

जी हाँ! वह अपना **भेष बदलकर** जाता है क्योंकि **शाऊल राजा का व्यक्तित्व और शारीरिक बनावट** सारे इस्राएल में बहुत महत्वपूर्ण और पहचानने योग्य था, जैसा कि हम

1 शमूएल (Samuel) 10:23 "तब वे दौड़कर उसे वहां से लाए; और वह लोगों के बीच में खड़ा हुआ, और वह कन्धे से सिर तक सब लोगों से लम्बा था"।

में पढ़ते हैं।

और फिर हम आगे पढ़ते हैं–

---

1 शमूएल (Samuel) 28:9 "स्त्री ने उससे कहा, "तू जानता है कि शाऊल ने क्या किया है, कि उसने ओझों और भूतसिद्धि करने वालों का देश से नाश किया है। फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले।"

वचन में

जी हाँ! वह भूत-सिद्धि करनेवाली सावधान रहती है और **भूत-सिद्धियों के विरुद्ध** खुद शाऊल राजा के सख्त कानून का जिक्र करते हुएवह एक भूत-सिद्धि वाली है, बताने से इन्कार करती है!

अब सवाल यह उठता है कि **<u>आखिर शाऊल राजा ने ऐसा क्यों किया?</u>**

आइये हम वचनों को पढ़ते हुएयह देखें –

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

व्यवस्थाविवरण (Deuteronomy) 18:10-12 "तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में होम करके चढ़ानेवाला, या भावी कहने वाला, या शुभ - अशुभ मुहूर्तों का माननेवाला, या टोन्हा, या तान्त्रिक, या बाजीगर, या ओझा से पूछनेवाला, या भूत साधने वाला, या भूतों का जगाने वाला हो। क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं; और इन्हीं घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उन को तेरे सामने से निकालने पर है।"

जी हाँ! यहाँ हम **<u>परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा</u>** को देखते हैं, जो कि भूत - सिद्धि, ज्योतिषी और दूसरे प्रेतवादियों से विचार - विमर्श करने के विरुद्ध हैं क्योंकि यह सब परमेश्वर के नज़र में बहुत "घिनौना" है।

यहाँ तक कि शाऊल राजा ने परमेश्वर की इस आज्ञा को पूरा करके उसे एक कानून बनाया था!

फिर क्या हुआ उसे? शाऊल राजा बदल क्यों गए?

इसका उत्तर हम पढ़ेंगे –

1 शमूएल (Samuel) 16:14 "यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा।" वचन में

वो रहा!

जैसा की **1 शमूएल (Samuel) 15:10-11** वचन में दर्ज किया गया है, शाऊल ने **<u>परमेश्वर की आज्ञा न मानी</u>**, जहाँ उसे यह आज्ञा दी गई थी कि वह अमालेकियों का **पूरी तरह से** सर्वनाश करें।

यहाँ तक कि भविष्यद्वक्ता शमूएल ने उसकी इस अवज्ञा के कारण उससे बात करना **बन्द** कर दिया था, जैसा की हम **1 शमूएल (Samuel) 15:35** वचन में पढ़ते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शाऊल राजा ने "यहोवा की आत्मा" को **खो** दिया था... और इसने शाऊल राजा में एक बड़ा परिवर्तन लाया, जैसा कि हम "यहोवा की आत्मा" के बारे में पढ़ते हैं –

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

2 तीमुथियुस (Timothy) 1:7 "क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।"

जी हाँ! उसने **संयम की आत्मा** को खो दिया था और एक साधरण सांसारिक व्यक्ति की तरह विश्वास करना शुरू कर दिया था।
मन में इस आधार की समझ के साथ हम वचनों के अध्यन्न में वापस जाते हुएपढ़ेंगे

1 शमूएल (Samuel) 28:10, 11 "शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर उससे कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा। तब स्त्री ने पूछा, "मैं तेरे लिये किस को बुलाऊ"? उसने कहा, "शमूएल को मेरे लिये बुला।"

शाऊल राजा डरी हुईभूत-सिद्धि वाली की **शपथ** लेते हुएउसकी सुरक्षा का आश्वासन देते हैं **और** फिर वह पूछती है कि उसे **किसकी मरी हुईआत्मा** को बुलाना होगा?

और फिर हम पढ़ते हैं कि आगे क्या होता है?

1 शमूएल (Samuel) 28:12 "जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई; और शाऊल से कहा, "तू ने मुझे क्यों धोखा दिया? तू तो शाऊल है।"

जब उस स्त्री ने शमूएल को देखा, तब उसने शाऊल राजा की **सही** पहचान को पहचानकर ऊँची आवाज़ में चिल्लाया।

यह कैसे हो सकता है?

उत्तर सीधा है! शमूएल की "आत्मा" ने शाऊल राजा को हमेशा की तरह उनके नाम से **नमस्कार** किया होगा, जैसा की उनकी आदत थी!!

शायद "शलोम", राजा शाऊल कहकर!

और आगे हम पढ़ते हैं कि –

1 शमूएल (Samuel) 28:13, 14 "राजा ने उससे कहा, "मत डर; तुझे क्या देख पड़ता है?" स्त्री ने शाऊल से कहा, "मुझे एक देवता पृथ्वी में से चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है"।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

14 उसने उससे पूछा, "उसका कैसा रूप है"? उसने कहा, "एक बूढ़ा पुरूष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है"। तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर गिरके दण्डवत किया।"

कृपया <u>बहुत</u> सावधानीपूर्वक ध्यान दें, कि यहाँ शाऊल राजा "शमूएल" को बिल्कुल भी **<u>नहीं देख</u>** सकते!!

जी हाँ! राजा शाऊल को भूत-सिद्धि वाली को पूछना पड़ता है, कि **उसको क्या दिखता है** क्योंकि वह खुद **कुछ भी नहीं देख सकता**।

इन शब्दों पर ध्यान दें -

"राजा शाऊल ने उससे कहा... तुझे क्या देख पड़ता है?"

और फिर -

"...उसने उससे पूछा, उसका कैसा रूप है?"

उसके बाद वह शमूएल के **<u>सामान्य पहचान का प्रतीक</u>** और पहनावे को उस स्त्री के विवरण से प्राप्त करता है...।

"...एक बूढ़ा पुरुष <u>बागा (चद्दर) ओढे</u> हुए चढ़ा आता है"।

जी हाँ! उन दिनों में **चद्दर/बागा** एक भविष्यद्वक्ता का चिन्ह था।

2 राजाओं (Kings) 2:13 में **एलिजा की चद्दर** को याद कीजिए!!

इस प्रकार हम शमूएल की 'आत्मा' के साथ शाऊल की बातचीत को देखते हैं ...

1 शमूएल (Samuel) 28:15 "शमूएल ने शाऊल से पूछा, "तू ने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है"? शाऊल ने कहा, "मैं बड़े संकट में पड़ा हूं; क्योंकि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वपनों के"; इसलिये मैं ने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूं।"

वचन में

फिर शमूएल **<u>भूत-सिद्धिवाली के मुँह</u>** से शाऊल राजा से बात करना शुरू करता है। वह परमेश्वर के विरुद्ध शाऊल राजा के हर एक अवज्ञा के कार्यों को दोहराता है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

फिर शाऊल राजा शमूएल से विनती करते हुए पलिश्तियों के साथ युद्ध की स्थिति के बारे में उसकी सलाह और सुझाव और मार्गदर्शन मांगता है।

और जवाब में शमूएल **एक भविष्यवाणी करता** है, जिसे हम पढ़ते हैं -

1 शमूएल (Samuel) 28:18-19 "तू ने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया। फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा। और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा; और इस्राएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा।" वचन में

जी हाँ! यहाँ शमूएल शाऊल के **(निकटतम) भविष्य** के बारे में एक **भविष्यवाणी** करता है - यह कहकर कि "और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा" (मौत की स्थिति में)

इस प्रकार मदद के लिए शाऊल राजा की विनती का उत्तर **शमूएल की "आत्मा"** -- एक **भविष्यवाणी** द्वारा करती है!

पर क्या यह "भविष्यवाणी" पूरी हुई थी?

आइये हम इसे पलिश्तियों के साथ युद्ध का वर्णन पढ़ते हुए देखें -

1 शमूएल (Samuel) 31:1-3 "पलिश्ती तो इस्राएलियों से लड़े; और इस्राएली पुरुष पलिश्तियों के सामने से भागे, और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गए। पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रों के पीछे लगे रहे; और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र योनातन, अबीनादाब, और मल्कीशु को मार डाला। शाऊल के साथ धमासान युद्ध हो रहा था, और धनुर्धारियों ने उसे जा लिया, और वह उनके कारण अत्यन्त व्याकुल हो गया।"

इसके तुरन्त बाद पलिश्तियों के साथ युद्ध में शाऊल राजा को हराया गया और राजा और उसके पुत्र दोनों ही मारे गए थे। **(वचन 2 पर ध्यान दें)**

ऐसा लगता है कि भविष्यवाणी पूरी हुई थी!

लेकिन रुकिए!!!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

आइये हम एक वचन को पलटकर देखें -

2 शमूएल (Samuel) 2:8-10 "परन्तु नेर का पुत्र अब्नेर जो शाऊल का प्रधान सेनापति था, उसने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को संग ले पार जा कर महनैम में पहुंचाया; और उसे गिलाद, अशूरियों के देश, यिज्रेल, एप्रैम, बिन्यामीन, वरन समस्त इस्राएल प्रदेश पर राजा नियुक्त किया। शाऊल का पुत्र ईशबोशेत चालीस वर्ष का था जब वह इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। परन्तु यहूदा का घराना दाऊद के पक्ष में रहा।"

देखा! शाऊल का एक पुत्र **नहीं मरता**। वह **ईशबोशेथ** था!!!
वह आगे जाकर राजा बनता है और वह तब मरता है जब उसे बहुत समय के बाद मारा जाता है। **2 शमूएल (Samuel) 4:8**

क्या परमेश्वर के पवित्र भविष्यद्वक्ता, शमूएल की भविष्यवाणी सिर्फ **90-95 प्रतिशत** पूरी होगी?

कभी नहीं!!

तो फिर यहाँ पर "शमूएल" कौन है?

यह और कोई नहीं, पर "झूठ का पिता"- **शैतान** है!!

जो भविष्यद्वक्ता शमूएल के रूप में **अभिनय और भेषधारण** कर रहा था!!

उसके **पहले झूठ** को प्रचारित **और मजबूत** करने के लिए। **उत्पत्ति (Genesis) 3:4**

वह **मरे हुओं का भेषधारण** करके मृत्यु के बाद जीवन का विचार देता है।
यहाँ भी वह भविष्यद्वक्ता शमूएल का **भेषधारण** करके एक **भविष्यवाणी** करता है। आखिरकार उसके पास शाऊल राजा की परिस्थिति और पलिश्तियों के साथ युद्ध की बहुत सारी **जानकारी** थी।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इसके अतिरिक्त उन दिनों में राजा अपनी सेनाओं को **सीधे** विरोधी सेना के **रा**जा से लड़ने आगे बढ़ाते थे।

उनके पुत्र उनके पीछे ही होते!

इस प्रकार या तो हारनेवाला राजा और साथ ही उनके पुत्र अपनी जान खो देंगे या बहुत घायल हो जाएंगे।

शैतान इस सब को अपने मन में रखके, **अनुमान** लगाता है कि कैसे भविष्य की **घटनाओं** का विकास होगा!!

लेकिन इसका अनुमान 100 प्रतिशत सही नहीं हो सकता।

उसके **धोखे** और **अनुमान** विफल हो जाते हैं, जिससे उसके **कामों** की असलियत खुल जाती है!

हज़ारों सालों से शैतान लोगों को **ज्योतिषी** और **सुननियों** के जरिये, भविष्य की भविष्यवाणी करने की शक्ति का दावा करके धोखा दिया है।

वह किसीके **अतीत** को **सही ढंग** से वर्णन करते हुए उसका विश्वास हासिल करता है और उसके बाद वह सभी जानकारी के आधार पर भविष्य की घटनाओं का **अनुमान** लगाता है जहाँ सफलता का प्रतिशत कभी भी 100 नहीं हो सकता क्योंकि केवल परमेश्वर **अकेले** ही भविष्य को **सही ढंग** से जानते हैं।

इसी प्रकार यहाँ भी शैतान शमूएल भविष्यद्वक्ता का भेषधारण करके **शाऊल राजा को धोखा देता है**, लेकिन हम इस विषय को "थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहां" की **सुनहरी चाबी** को लागू करते हुए **पहचानने** में सक्षम है, यद्यपि **बाईबल स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं कहता है**।

अब पाठ के दूसरे अंश को आइये हम पलटकर देखें

2 **मत्ती (Matthew) 17:1-3**

मत्ती (Matthew) 17:1-3 “छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ, और उसका मुंह सूर्य के समान चमका और उसका वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया। और मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।” ok

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यहाँ यीशु के रूपांतर की घटना को दर्ज किया गया है।

"और, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए"

यह क्या है? क्या **मृत** मूसा और एलिज़ा की **"आत्मा"** वहां दिखाई दी थी, जैसा कि बहुत लोग मानते हैं।

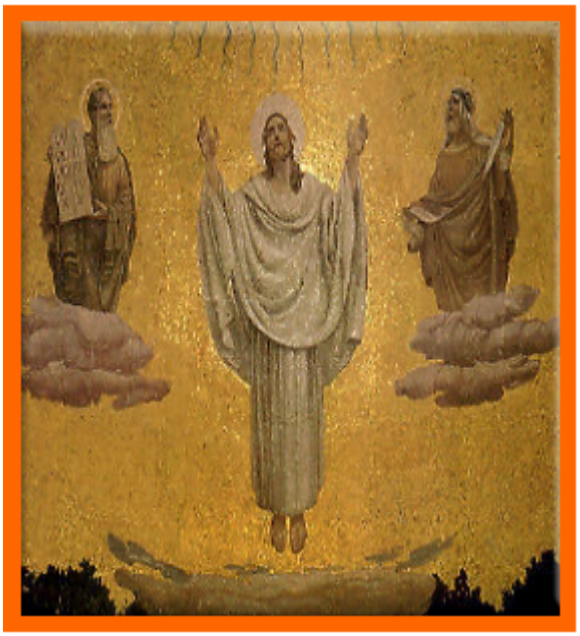

अगर ऐसा हुआ, तो यह बाईबल में आत्मा के **मर** जाने के उपदेश के **विरुद्ध** होगा, जिसका मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है!

इससे से पहले पहले कि हम उत्तर को देखें, हम यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि इसे देख रहे ये तीन प्रेरित -- **यूहन्ना, याकूब** और **पतरस**; मूसा और एलिज़ा को कैसे **पहचाने**?

उन दिनों में तो फोटोग्राफी का आविष्कार भी नहीं हुआ था!

तो उन्होंने मूसा और एलिज़ा को पहचाना कैसे?

आह, उत्तर की चाबी को हम तीसरे वचन में देखते हैं -

जी हाँ! बातचीत के दौरान यीशु ने उन्हें नाम से सम्बोधित किया होगा या बात करते समय एक दूसरे को नाम से सम्बोधित किया होगा।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इस प्रकार देख और **सुन** रहे प्रेरितों को उन दो आदमियों की **पहचान** का ज्ञान प्राप्त हुआ, जो यीशु से बात कर रहे थे!!

अब हम विषय पर आते हैं जो कि आत्मा मरती है के बाईबल के उपदेश का **खण्डन** करने जैसा लगता है।

मूसा और एलिज़ा की "आत्मा" कैसे जीवित रह सकती है, जब कि **वे** वास्तव में मर चुके थे?

आइये हम इसके उत्तर को यीशु के अपने मुख से ही सुनें -

मत्ती (Matthew) 17:9 "जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी, "जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।" ok

जी हाँ! **चाबी** यही है! "जो कुछ तुमने देखा है किसी से न कहना..."

बाईबल में दर्ज किये गए बहुत सारे अन्य **"दर्शन"** जैसा कि, **प्रकाशितवाक्य की पुस्तक** और **2 कुरिन्थियों (Corinthians) 12:1-4** में **प्रेरित पौलुस का दर्शन** और **प्रेरितों (Acts) 10:10-16** में **प्रेरित पतरस का दर्शन** और बहुत, बहुत दूसरों की तरह यह भी एक दर्शन ही था।

"दर्शन" असलियत नहीं है बल्कि एक **दृश्य चित्र** है।

क्या आपको पता है?

आजकल हम **हर दिन** दर्शन देखते हैं!! बहुत सारे विभिन्न दर्शन!

हमारे घर के भीतर ही - जी हाँ! **दूरदर्शन** के द्वारा!

जी हाँ! बहुत से मृत लोग चलते, बात करते और नृत्य करते हैं!

क्या यह असली है? क्या वे **सच में जीवित** हैं?

बिल्कुल नहीं! ये सब दर्शन हैं!!

तो फिर इस दर्शन का क्या मतलब है!!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यह पृथ्वी पर **परमेश्वर के आनेवाले राज्य** का एक **चित्रात्मक प्रतिनिधित्व** था, जो **"राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु"** यीशु मसीह के प्रभुत्व के अन्तर्गत होगा और उसके **दो चरण** होंगे -

मूसा उस राज्य के **दिखाई** देने वाली या शारीरिक अवस्था को दर्शाता है - यीशु के आने से **पहले** के पित्तर या वे जो परमेश्वर के सामने विश्वसनीय ठहरे थे, वे **मानवीय शासक** होंगे।

...जबकि **एलिज़ा** उस राज्य की **अदृश्य** या आत्मिक अवस्था को दर्शाता है - यीशु के आने के **बाद** की कलीसिया या विश्वसनीय लोग, **आत्मिक शासक** के रूप में। **यीशु इन दोनों के साथ राज्य और समायोजन करेंगे**, जैसा की यहाँ सचित्र किया गया है - "मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए..."

जी हाँ! यह यीशु की आनेवाली महिमा और उनके राज्य का एक दर्शन या दृश्य चित्र था!

आइये अब हम पाठ के तीसरे अंश को देखें -

3 **लूका (Luke) 23:43**

लूका (Luke) 23:43 "उसने उससे कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा॥"

यह एक प्रसिद्ध वचन है जिसे प्रत्येक **"शुभ शुक्रवार" (गुड फ्राइडे)** को याद किया जाता है और इससे आम तौर पर यह सिखाया जाता है कि कैसे **"मन फ़िरानेवाले चोर"** यीशु से क्षमा माँगकर स्वर्ग को जाता है!! और वो भी, **उसी दिन**!

क्या यह सच है? आइये वचन को पढ़ते हुए इसे देखें -

लूका (Luke) 23:42 "तब उसने कहा, हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

चोर के निवेदन पर ध्यान करें -

जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।"

यह निवेदन यीशु के राज्य में **अनुग्रह** का एक स्थान पाने के लिए था और **न** कि स्वर्ग जाने के लिए, जैसा की बहुत लोग सोचते हैं!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

और यह भी **ध्यान** रखें कि - **के.जे.वी.** या तमिल अनुवादों में वह **गलत** है, जहाँ चोर ने यीशु को "प्रभु" कहके सम्बोधित किया है।

उसने उन्हें केवल **"यीशु"** ही बुलाया था।

(एन. आई. वी. में देखें)

निश्चित तौर पर उस चोर ने यीशु को "प्रभु" के रूप में नहीं पहचाना था।

आइये हम इसके अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण बिन्दु पर ध्यान करें।

प्रेरितों या चेलों ने खुद कभी भी यीशु से **स्वर्ग जाने के लिए नहीं पूछा**, इसके बावजूद कि यीशु ने उन्हें यह वादा दिया था -

यूहन्ना (John) 14:3 "और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।"

जी हाँ! उन्हें स्वर्ग जाने का कोई **<u>विचार</u>** या **<u>इच्छा ही नहीं</u>** था!

वास्तव में, 3.5 वर्ष यीशु के पीछे आने का उनका उद्देश्य यीशु के साथ स्वर्ग में रहने का नहीं था।

उनके **उद्देश्य** को हम एक वचन को पढ़ कर पता कर लेंगे -

प्रेरितों के काम (Acts) 1:6 "अतः उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्त्राएल को राज्य फेर देगा?"

जी हाँ! उनके **इरादे** बहुत स्पष्ट थे!

वे एक **सांसारिक राज्य** का हिस्सा बनना चाहते थे, जिसमें संसार के दूसरे देशों से इस्राएल अत्याधिक ऊंचा होगा। वास्तव में वे यीशु के **"सांसारिक राज्य"** का हिस्सा बनने की इच्छा से इतना **भरे** हुए थे, कि वे अपने सारे खाली समय में उस राज्य में सबसे महान सम्मान उनके बीच में किसे मिलेगा, **<u>उसके बारे में बहस किया करते थे और लड़ा भी करते थे</u>**, जैसा कि हम पढ़ते हैं -

लूका (Luke) 22:24 "<u>उनमें यह वाद-विवाद भी हुआ</u> कि उनमें से कौन बड़ा समझा जाता है"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! **प्रेरितों** और चेलों ने **स्वर्ग** या **स्वर्गीय इच्छाओं** को तब तक नहीं समझा, **<u>जब तक उन्हें पेंटेकोस्ट के दिन में पवित्र आत्मा प्राप्त नहीं हुई।</u>**

अगर इनके मामले में ऐसा था तब वह चोर यीशु को **<u>कैसे</u>** **"प्रभु"** के रूप में पहचान सकता था?

फिर वहाँ असलियत में क्या हुआ था?

आइये अब हम वचन को पढ़ते हुए पता करें --

मत्ती (Matthew) 27:44 "<u>इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रूसों पर चढाए गए थे,</u> उसकी निन्दा करते थे॥"

शुरू में **<u>दोनों</u>** चोरों ने प्रभु का **अपमान** किया।

यह **मरकुस (Mark) 15:32** में भी दर्ज किया हुआ है।

फिर बहुत समय बाद यीशु को गौर से देखने और समझने से ...

उनमें से **<u>एक</u>** यीशु की निर्दोषता को महसूस करता है, जैसा की हम पढ़ते हैं -

लूका (Luke) 23:40-41 "इस पर दूसरे ने उसे डांटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है, और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया।"

जी हाँ! फिर वह यीशु के सिर के ऊपर रखे बोर्ड को देखता है, जिसे हम

लूका (Luke) 23:38 "और उसके ऊपर एक दोष-पत्र भी लगा था: यह **यहूदियों का राजा** है।" वचन में पढ़ते हैं -

और फिर

यूहन्ना (John) 19:19 "पीलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया, और उसमें यह लिखा हुआ था, **"यीशु नासरी, यहूदियों का राजा"**।" वचन में पढ़ते हैं -

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

जी हाँ! इसी बोर्ड को हम आजकल के क्रूस की मूर्तियों पर देखते हैं, **"INRI"** अक्षर के साथ।

INRI लैटिन अक्षर है, "यीशु नासरी, यहूदियों का राजा" के लिए।

अगर शब्द अलग किये गए तो -

I - **Isus** - यीशु

N - **Nazarainus** - नासरी

R - **Rex** - राजा

I - **Idurum** - यहूदियों का

इसके साथ ही चोर ने पिलातुस और यीशु की बातचीत को देखा और **सुना** था, जैसा की

यूहन्ना (John) 18:36, 37 "यीशु ने उत्तर दिया, मेरा राज्य इस संसार का नहीं; यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु मेरा राज्य यहां का नहीं। पीलातुस ने उससे कहा, तो क्या तू राजा है? यीशु ने उत्तर दिया, तू कहता है कि मैं राजा हूं। मैं ने इसलिये जन्म लिया और इसलिये संसार में आया हूं कि सत्य पर गवाही दूं। जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।" वचन में दर्ज किया हुआ है -

जी हाँ! इन सभी बातों को सुनकर और यीशु पर नज़दीकी से गौर करने के बाद, वह चोर उस बोर्ड को देखकर एक छोटा सा अनुग्रह मांगने के लिए प्रभावित होता है...

यह समझकर कि **शायद** यीशु **एक राजा** था और शायद **उसका एक राज्य** भी था!

और वैसे भी, उसने सोचा कि पूछने में कोई हानि नहीं है!

पर क्या तब यीशु का **राज्य** आ गया था?

जवाब तो ना है!!!

फिर वह चोर **अभी भी यीशु से इस अनुग्रह का इन्तज़ार** कर रहा है!

वह इसे **उसी दिन** प्राप्त नहीं कर सका होगा क्योंकि हम पढ़ते हैं कि ...

यीशु **खुद** उस दिन कहाँ थे -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

प्रेरितों के काम (Acts) 2:31 "उसने होने वाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया और न उसकी देह सड़ने पाई।"

जी हाँ! तीसरे दिन उसके पुनरुथान तक, वह तीन दिनों के लिए **"अधोलोक"** में थे।

इस मामले और इसके सन्दर्भ को समझने के बाद आइये अब हम इस वचन में एक दूसरे मामले को देखते हैं, **जब इसे अल्पविराम के सम्बन्ध में देखा जाए**, जैसा की हम

लूका (Luke) 23:43 "उसने उससे कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा॥" वचन में पढ़ते हैं

कृपया ध्यान दें:
हिन्दी में इस वचन को अनुवाद करते समय अल्पविराम का उपयोग नहीं किया गया है।
अंग्रेजी का वचन:
"And Jesus said unto him, verily I say unto thee, Today shall thou be with me in Paradise".
हिन्दी में इस वचन का अल्पविराम के साथ अनुवाद: **"और यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा"।**
इस प्रकार से यीशु ने चोर को आश्वासन दिया कि **"मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही..."**
यह यीशु के **गारंटीकृत आश्वासन** को सन्दर्भित करता है "तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा"
(परमेश्वर का राज्य **- 2 कुरिन्थियों (Corinthians) 12:4)**

अल्पविराम का स्थान पूरे वाक्य के मतलब को बदल सकता है, लेकिन हमें यह अवश्य **याद** रखना चाहिए कि प्राचीन हस्तलेखों में **विराम चिन्हों** का प्रयोग बिल्कुल भी **नहीं** किया गया था!!

पहला उदाहरण

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

"मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही..."

यहाँ पर मतलब यह मालूम पड़ता है कि वह चोर **तुरन्त - उसी दिन** परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर जाएगा! लेकिन हम जानते हैं कि **ऐसा नहीं हो सकता** है क्योंकि तब परमेश्वर का राज्य स्थापित ही नहीं हुआ था और 2000 वर्ष के बाद **आज भी** स्थापित नहीं हुआ है!

दूसरा उदाहरण

"मैं आज ही, तुझ से सच कहता हूँ, कि तू मेरे साथ स्वर्गलोग में होगा"

इस वाक्य में अल्पविराम का स्थान और "आज ही" शब्द को उचित स्थान पर प्रयोग करने से, यह प्रभु के वचन का अधिक सटीक अर्थ देता है। यहाँ मतलब यह है कि प्रभु ने **उस दिन** चोर को यह आश्वासन दिया की जब उनका राज्य आएगा तब चोर को उसकी माँगी हुई आशीष मिलेगी।

इसका **मतलब यह नहीं** है कि चोर को **उसी दिन** आशीष मिल जायेगी!

अन्य उदहारण:

1) उसे मारो मत, छोड़ दो।

2) उसे मारो, मत छोड़ो।

यहाँ हम देखते हैं कि अल्पविराम का **स्थान बदलने से** बिल्कुल **उल्टा** अर्थ हो जाता है।

बहुत सदियों के लिए बाईबल में अध्यायों या वचनों का भाग नहीं किया गया था।

ऐसा बहुत बाद में हुआ और 700 - 800 वर्षों पहले ही हुआ।

इस बाईबल को 1236 ईसवी में **कार्डिनल हुगो** के द्वारा अध्यायों में विभाजित किया गया था।

उसके बाद वह **रब्बी नथान** के द्वारा वचनों में विभाजित हुआ और उसे 1555 ईसवी में एक अंग्रज़ी प्रिन्टर **स्टीवेन्स** द्वारा अपनाया गया।

इस प्रकार वह चोर **अभी मृत है** और वह प्रभु के दूसरे आगमन पर पुनरुत्थान के दिन उठेगा और उसे उपयुक्त रूप से सम्मानित किया जाएगा, जब

-"सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

उसकी अंतिम और प्रभु की मृत्यु से पहले के क्षणों में उसकी प्रभु से कही गई भली बातों को याद किया जाएगा।

और इसके अलावा उसे यह पता चलेगा कि उसके बारे में **बाईबल में दर्ज किया गया है**! वाकई में बहुत लोग होंगे जो **क्रूस पर प्रभु के आखरी क्षणों** के बारे में जानने के लिए और प्रभु की **वेदना के सबसे बुरे क्षणों** में उसकी भली बातों की **प्रशंसा** करने के लिए उसे ढूंढेंगे!

जी हाँ! वाकई में पृथ्वी पर यीशु के महिमामय राज्य में...उसे "याद" किया जाएगा!

आइए अब हम पाठ के चौथे अंश को देखें–

4 → **1 थिस्सलुनीकियों (1 Thessalonians) 5:23**

1 थिस्सलुनीकियों (1 Thessalonians) 5:23 "... और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।"

इसका मतलब क्या है?

इस वचन का प्रयोग प्रत्येक मनुष्य में एक **अलग** प्राण और शरीर और आत्मा को दिखाने के लिए किया जाता है।

क्या यहाँ इसका अर्थ यह है?

कृपया ध्यान दें, कि यहाँ उल्लेखन थिस्सलुनीके के कलीसिया के **कई** सदस्यों का है, लेकिन लगता है कि सबको **एक ही** आत्मा, प्राण और शरीर है।

क्यों और कैसे?

या यह पत्री **थिस्सलुनीके के कलीसिया के एक अकेले व्यक्ति के** लिए लिखी गयी थी।

आइये हम इस मामले के बारे में

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

1 थिस्सलुनीकियों (1 Thessalonians) 1:1 "पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनिकियों की कलीसिया के नाम, जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है: अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे॥" वचन में पढ़ें

यह एक व्यक्ति को नहीं बल्कि <u>पूरी कलीसिया के लिए थी</u>।

निश्चित रूप से थिस्सलुनीके के कलीसिया में **<u>एक से अधिक सदस्य होंगे!!</u>**

वास्तव में थिस्सलुनीके के कलीसिया में तो बहुत सारे सदस्य थे।

यदि यह वचन **प्रत्येक** व्यक्ति के लिए लिखा गया था, तो फिर इस वाक्य को इस प्रकार होना चाहिए था - **"...तुम्हारी आत्माओं और प्राणों और देहों हमारे यीशु मसीह के आने तक पूरे-पूरे और निर्दोष सुरक्षित हैं..."**।

लेकिन ऐसा नहीं है!

अनेक सदस्यों की कलीसिया का **एक आत्मा** और **एक देह** और **एक प्राण** कैसे हो सकता है?

इफिसियों (Ephesians) 4:4 "<u>एक ही देह है, और एक ही आत्मा</u>; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।"

देखा आपने वहाँ?

जी हाँ! कलीसिया के पास **<u>एक देह और एक आत्मा है</u>**।

और फिर हम आगे पढ़ते हैं...

प्रेरितों के काम (Acts) 4:32 "विश्वास करनेवालों की मण्डली एक चित्त <u>और एक मन की थी</u>, यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था।"

जी हाँ! **कलीसिया** का प्राण भी **एक** है - **<u>एक जीवित शरीर होने के नाते</u>**!

और प्रेरित पौलुस **<u>कलीसिया के इस पहलू को समस्त रूप में बात करते हुए</u>** थिस्सलुनीके के कलीसिया को यह वचन लिखते हैं।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इस प्रकार से हमने देखा कि आत्मा / प्राण मरती है, यह बाईबल उपदेश भजन संहिता (Psalms) 22:29 पुराने नियम से लेकर नए नियम तक पूरी तरह से तालमेल रखता है।

आइये अन्त में हम कुछ दूसरे वचनों में मनुष्य की आत्मा के स्वाभाव से सम्बन्धित **कुछ अन्य शंकाओं** के बारे में अध्यन्न करें -

भजन संहिता (Psalms) 103:1, 2

भजन संहिता (Psalms) 103:1, 2 "हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे! हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।"

जी हाँ! यह अत्यन्त **प्रसिद्ध** प्रशंशा के लिए प्रार्थना के अन्त में एक रिवाज़ की तरह उपयोग में लाया जाने वाला वचन है!!

इस वचन में ऐसा लगता है कि मानो मनुष्य के पास आत्मा **है** और वह खुद एक **आत्मा नहीं है!**

क्या ऐसा है?

इसका उत्तर यह है कि, यह केवल काव्य भाषा है जिसमें **तीसरे व्यक्ति** के रूप में **स्वंय** के बारे में बात किया गया है।

यह फिर से

भजन संहिता (Psalms) 139:14 "मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं।"

वचन में देखा और पाया जाता है।

जी हाँ! कृपया ध्यान दें, अंग्रेजी में "my soul" को हिन्दी के वचन में **"मैं"** करके अनुवाद किया गया है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! इस वचन में "my soul" या **"मैं"** खुद भजन संहिता लिखने वाले दाऊद को दर्शाता है और वे तीसरे व्यक्ति के रूप में **खुद** के बारे में लिखते हैं।
इसी प्रकार से, **भजन संहिता (Psalms) 103:1, 2** वचनों में भी खुद के बारे में तीसरे व्यक्ति के रूप में **कहा जा रहा है!**

लूका (Luke) 2:35

लूका (Luke) 2:35 "वरन तेरा प्राण भी तलवार से वार पार छिद जाएगा...।"

इस **वचन** में हम **शमौन** को मरियम से भविष्यद्वाणी करते हुए पढ़ते हैं कि जब वह अपने प्रिय पुत्र यीशु के दुखों को देखेगी तो किस प्रकार की **निजी वेदना** से होकर जायेगी।

यह एक **इशारे वाली भाषा** है, बिल्कुल वैसे ही कि जैसे कोई कहे -

"उसने मेरी पीठ पर छुरा भोक दिया"

यह निश्चित रूप से एक व्यक्ति के द्वारा किये गए **छल** और **विश्वासघात** को सन्दर्भित करता है, **न कि एक चाकू से सचमुच में** पीछे में छुरा मारने को!
इस प्रकार से यहाँ भी शमौन इशारे वाली भाषा में भविष्य में मरियम को होनेवाले दुःखों के बारे में बात करता है जिन्हें यीशु की माता होने के कारण उनके दुखों को देखने के कारण उसे सहना पड़ेगा।

इस प्रकार से एक आत्मा / प्राण जीवित मनुष्य या कोई अन्य जीवित प्राणी को सन्दर्भित करता है जो एक देह और जीवन की श्वाँस से मिलकर बना हो। देह और जीवन की श्वाँस दोनों मिलकर आत्मा प्राण को बनाते हैं -- जिसमें जीवन, एक मन और एक हृदय होता है।

अन्ततः हम आत्मा मरती है इस उपदेश के अन्तिम **"बाईबल सम्बन्धी अन्तर्विरोध"** के बारे में **लूका (Luke) 16:19-31** वचनों में पढ़ते हैं -
जी हाँ! पवित्रशास्त्र का यह अंश **धनी मनुष्य और निर्धन लाजर** के बारे में वर्णन करता है!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

-उन दोनों की आत्मा नहीं मरती **बल्कि ऐसा लगता है** कि **स्वर्ग** और **नर्क** में उनकी मृत्यु के बाद भी जीवित रहती है!

अगले पाठ में मनुष्य की आत्मा के **तीसरे** भाग में इस संदेह के बारे में **विस्तारपूर्वक** अध्यन्न करेंगे।

--आमीन--

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com